कोंकणी साहित्य

डॉ. रवींद्रनाथ मिश्र

भगवान परशुराम की भूमि गोवा साहित्य, कला और संगीत की दृष्टि से काफी समृद्ध है। इसकी कई पौराणिक एवं ऐतिहासिक गाथाएँ हैं जिनमें भारतीय और पाश्चात्य संस्कृति का अद्भुत तालमेल दिखाई देता है। ईश्वर ने इस धरती को खूब सोच–समझकर कर गढ़ा है। यहाँ प्रकृति अपनी पूरी खूबसूरती के साथ मौजूद है। यही कारण है कि भौगोलिक दृष्टि से इस छोटे से प्रदेश में प्रत्येक वर्ष लाखों की संख्या में देशी एवं विदेशी सैलानी आते हैं। गोवा का नाम लेने पर पर्यटक स्वर्गिक अनुभूति करते हैं। यहाँ कविता की पंक्तियाँ अपने आप फूटती हैं। कथा रोज जन्म लेती है। दरअसल सूचना विस्फोट, बाजारवाद, भूमंडलीकरण, आवागमन की सुविधा आदि के कारण यहाँ की मौलिकता क्षीण हुई है। राजनीतिक और सामाजिक जीवन का ताना–बाना भी बिगड़ा है। देश में सांप्रदायिक सद्भाव की मिसाल रखने वाले गोवा की छवि मार्च, 2006 के दक्षिण गोवा में हुए दंगे से धूमिल हुई है।

गोवा यानि गोमंतक कोंकणी भाषा की जननी है। सर जार्ज अब्राहम ग्रियर्सन ने अपनी पुस्तक ***भारत का भाषावैज्ञानिक सर्वेक्षण*** में लिखा है कि कोंकणी भाषा का असली स्थान गोमंतक या गोवा है। इसलिए इस प्रदेश को गोमंतक भी कहते हैं। मैंने इसका उल्लेख यहाँ इसलिए किया कि कुछ लोगों का मानना है कि कोंकणी मराठी भाषा का ही एक रूप है इसलिए

दोनों भाषाओं को लेकर बहुत दिनों तक विवाद रहा जोकि आज भी कायम है। चूंकि गोवा महाराष्ट्र, कर्नाटक और केरल की सीमा से लगा हुआ है इसलिए स्थान विशेष के आधार पर कोंकणी के विविध स्वरूप और देवनागरी, रोमन, कन्नड, मलयालम आदि विभिन्न लिपियाँ हैं। कोंकणी भाषा पर क्षेत्रगत प्रभाव के कारण इसके विविध रूप मिलते हैं, जैसे कि रत्नागिरी कोंकणी, दक्षिण कर्नाटक कोंकणी, केरल कोंकणी, गोवा में हिंदुओं और ईसाइयों की कोंकणी आदि। इसी प्रकार कोंकणी की साष्टी, केरली, कोडियाली, कारवारी, बारदेशी, मंगलूरी और अंत्रुजी सात बोलियाँ प्रचलित हैं।

आजकल ईसाई समुदाय जहाँ कोंकणी की शिक्षा देवनागरी के साथ–साथ रोमन लिपि में करने की माँग कर रहा है, वहीं मराठीवादी मराठी की अस्मिता को लेकर तरह–तरह के आंदोलन की बात कर रहे हैं। इस प्रकार कोंकणी भाषा और साहित्य को अपनी अस्मिता बनाए रखने के लिए अनवरत संघर्ष करना पड़ रहा है। 1961 के पूर्व पोर्तुगीज शासनकाल के दौरान प्राथमिक शिक्षा मराठी, पोर्तुगीज और अंग्रेजी भाषा में दी जाती थी। मराठी और अंग्रेजी माध्यम के स्कूलों को सरकार से किसी प्रकार का अनुदान नहीं मिलता था। कोंकणी की शिक्षा की व्यवस्था नहीं थी। कुछ लोग व्यक्तिगत तौर पर अंग्रेजी के साथ रोमन लिपि में कोंकणी की शिक्षा देते थे। मराठी धर्म और संस्कृति की भाषा होने के कारण हिंदू अपने बच्चों को मराठी की और ईसाई समुदाय पोर्तुगीज और अंग्रेजी की शिक्षा देते थे।

गोवा मुक्ति के बाद प्राथमिक स्तर के सारे पोर्तुगीज स्कूल अंग्रेजी माध्यम में हो गए। 1961 के बाद महाराष्ट्र गोमंतक पार्टी के 13 साल सत्ता में होने के कारण मराठी भाषा को विशेष रूप से बढ़ावा मिला और कोंकणी की हालत लगभग उपेक्षित सी रही। जून 1991 में सरकार के एक अधिनियम के अनुसार 113 अंग्रेजी के प्राइमरी स्कूल कोंकणी माध्यम में हो गए। वैसे 1975 में राष्ट्रीय साहित्य अकादेमी की मान्यता एवं 1983 में कोंकणी अकादेमी की स्थापना तथा 87 में राज्यभाषा का दर्जा और 92 में संविधान की आठवीं अनुसूची में कोंकणी को शामिल किए जाने पर इसकी प्रगति के द्वार खुले। कोंकणी भाषा, साहित्य संवर्धन हेतु कोंकणी अकादेमी, कोंकणी विभाग गोवा विश्वविद्यालय, कोंकणी भाषा मंडल, कोंकणी लेखक संघ, अस्मिताएँ प्रतिष्ठान, गोवा कला अकादमी,

इंस्टीट्यूट ऑफ मिनेझिज ब्रागांजा, टॉमास स्टीवंस कोंकणी केंद्र आदि संस्थाओं की स्थापना की गई।

कोंकणी साहित्य की प्रगति की दृष्टि से 2005 का साल काफी उर्वर रहा है। इस वर्ष मराठी ओर कोंकणी के प्रसिद्ध साहित्यकार लक्ष्मणराव सरदेसाय की जन्मशती धूमधाम से मनाई गई। उनके जीवन एवं साहित्य पर अनेक संस्थाओं द्वारा संगोष्ठियों, व्याख्यानों, कार्यशालाओं आदि का आयोजन किया गया। इसके अतिरिक्त अन्य साहित्यिक गतिविधियाँ भी चलती रहीं।

काव्य लेखन

कोंकणी साहित्य में अन्य भाषाओं की भांति काव्य लेखन की विपुल एवं सुदीर्घ परंपरा रही है। लोकप्रिय कवि र. वि. पंडित एवं मनोहरराय सरदेसाय ने आधुनिक कोंकणी कविता की नींव रखी। नागेश करमली, पांडुरंग भांगी, पुंडलीक नारायण नायक, पंढरीनाथ लोटलीकर, प्रकाश पाडगांवकर, रमेश भगवंत बेळुस्कार, श्रीमती नयना आडारकार जैसे अनेक रचनाकार विभिन्न विषयों पर कविताएँ लिख रहे हैं। इस वर्ष गोवा कोंकणी अकादेमी द्वारा स्वर्गवासी लेखकों की साहित्यिक कृति प्रकाशन योजना के अंतर्गत शंकर भंडारी के काव्यसंग्रह ***शंकर फुळां*** का प्रकाशन हुआ। कवि, अनुवादक रमेश भ. बेळुस्कार के ***घुरु घुरु, वारो*** और ***चू चू*** नामक दो प्रसिद्ध बालगीत–संग्रह प्रकाशित हुए, जिनका लोकार्पण 11–10–05 को इंस्टीट्यूट मिनेझिस ब्रागांझ सभागार में संपन्न हुआ। भाळचंद्र गांवकार के ***थाव*** काव्य–संकलन में समसामयिक एवं रोजमर्रा के जीवन पर आधारित 78 कविताएँ संकलित हैं। कोंकणी अकादेमी ने तुकाराम शेट के ***पर्यावरण गितां*** एवं विशाल खांडेपारकार के ***आनीक एक मृत्युंजय*** काव्य पुस्तकों का प्रकाशन लेखक की प्रथम कृति प्रकाशन अनुदान योजना के तहत किया। अपने आस–पास के जीवन एवं परिवेश की गंध को प्रकाश द. नायक ने ***कस्तूर–गंध*** नामक काव्य–संग्रह की 34 कविताओं के माध्यम से व्यक्त किया है। यह उनका दूसरा संकलन है। ***मातयेंतले गंध*** (माटी की गंध) योगिनी बोरकार के प्रकाशित पहले काव्य–संकलन में *कळी, साद, फातर, सोद, झोंपय, गंध, पावस* आदि शीर्षक से कुल 46 कविताएँ संकलित हैं। भिकाजी घाणेकार के ***पैगंबर गीतां***

नामक प्रकाशित काव्य–संग्रह में उनके जीवन के अनुभवों को समेटती हुई 28 कविताएँ हैं। स्वानुभूतियों पर आधारित सामाजिक जीवन के विभिन्न चित्रों को युसूफ अ. शेख ने अपनी ***रंगधाय*** कविता की पुस्तक में सुंदर ढंग से विविध कविताओं के माध्यम से उकेरा है। भरत नायक के बालगीत–संग्रह ***एक आसलो*** में तरह–तरह के पशु–पक्षियों से संबंधित कुल 36 गीत संकलित हैं। डॉ. ज्योत्स्ना कामत के ***सुरग्यासर*** (कोंकणी लग्नापदाचे संग्रह) नामक पुस्तक में विवाह के अवसर पर गाए जाने वाले कोंकणी गीतों का संग्रह किया गया है जिसमें कोंकण भूभाग के लोकजीवन की संस्कृति का अनूठा चित्र प्रस्तुत किया गया है।

इस वर्ष की एक खास साहित्यिक उपलब्धि यह रही है कि मूलतः शिक्षक एवं अनुवादक सुरेश गुंडू आमोणकार ने मराठी संत ज्ञानेश्वर द्वारा आम जीवन के लिए लिखी गई 'ज्ञानेश्वरी' का ***रोसाळ कोंकणी ज्ञानेश्वरी*** नाम से कोंकणी में अनुवाद किया जिसका लोकार्पण 7 नवंबर 05 को गोवा के मुख्यमंत्री प्रतापसिंह रावजी राणे ने किया। इस अवसर पर कोंकणी के जानेमाने हस्ताक्षर मौजूद थे। सुरेश आमोणकार को साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा 1999 में ***धम्मपद*** का कोंकणी में अनुवाद के लिए भाषांतर पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके अतिरिक्त संजीव बेरेंकार, श्रीमती नयना आडारकार शुभु, काशीनाथ गावडे, मनोज कामत, शशिकांत पुनाजी, नम्रता सातेलकार, निलबा खांडेकार, सु. म. तडकोड, यशवंत पालेकार जैसे रचनाकारों की कविताएँ यहाँ स्थानीय पत्र–पत्रिकाओं में पूरे साल भर प्रकाशित होती रही हैं।

कथा लेखन

आधुनिक कोंकणी कथा लेखन की शुरुआत मुख्यतः गोवा मुक्ति (1961) के बाद पुंडलीक नायक के ***अच्छेव*** (1977), दामोदर मावजो के ***कार्मेलीन*** (87) और महाबळेश्वर सैल के ***काळी गंगा*** (90) उपन्यास से मानी जाती है। इनके पूर्व की पीढी में बालकृष्ण भगवंत बोरकार, लक्ष्मण राव सरदेसाय, पाण्डुरंग भांगी, सुमंत केळेकार, चंद्रकांत केणी, उदय भेम्ब्रे, यशवंत पालेकार, विष्णु नायक, सुरेश काकोडकार आदि का नाम उल्लेखनीय है।

इस वर्ष अशोक कामत का ***घणाघाय नियतीचे*** (नियति रूपी हथौड़े की मार) नामक प्रसिद्ध उपन्यास प्रकाशित हुआ। अभी तक इनकी नाटक, कहानी और कविता की कुल सात पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं। 'घणाघाय' उपन्यास में लेखक ने अंशतः राष्ट्रीय स्वतंत्रता संग्राम का जिक्र करते हुए एक बदनसीब परिवार की संघर्षमयी जीवन गाथा का चित्रण किया है जिसमें उसके स्वयं के जीवन की व्यथा कथा झलकती है जहाँ स्वार्थ, कपट, अहं, खोखली प्रतिष्ठा आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है। आत्मकथात्मक शैली में लिखे गए इस उपन्यास की भाषा सरल एवं बोधगम्य है।

मूलतः कवि और अनुवादक रमेश भगवत बेळुस्कार ने ***पर्वनवा*** बालकथा के माध्यम से कोंकणी कहानी विधा में दस्तक दी है। बाल जीवन के विविध चित्रों को उन्होंने 15 कहानियों के माध्यम से व्यक्त किया है। कल्याणी भरत नायक की ***देवकीली चवथ*** में *देवकीली चवथ, अमराची खोशी, काटमुयेचें गर्वहरण, सुकण्याच्या रंगांची काणी* और *दोगुल्लेची भोवडी* नामक पाँच बाल कहानियाँ संकलित हैं। कोंकणी कथा लेखिका के रूप में अपनी विशेष पहचान बनाने वाली जयंती नायक के ***राजरत्नां, गांवरान*** नाम से दो लोक कहानी–संग्रह प्रकाशित हुए। 'काली गंगा' और 'युगसांवार' जैसी महत्वपूर्ण कृति के लेखक महाबळेश्वर सैल का ***बायनेट फायटींग*** कहानी संग्रह प्रकाशित हुआ। इसमें जीवन और जगत से जुड़ी *मीर्गवाल, सात जण मावळयांलो भाचो, खरोच हांव चुकिळों? एक सुन्न मरण, सुमती, राननागीण* आदि शीर्षक से कुल बाईस कहानियाँ संकलित हैं। फिलोमीना साँफ्राँसिस्को की आम ज़िंदगी से जुड़ी रोजमर्रा के जीवन की घटनाओं पर उनकी अपनी दृष्टि पर आधारित 15 लघु कहानियों का संग्रह ***म्हजो दिस्टावो*** नाम से छपकर आया। कोंकणी अकादेमी ने स्वर्गवासी लेखकों की साहित्य कृति प्रकाशन योजना के अंतर्गत दुर्गादास गावडे के कथासंग्रह ***आदण*** का प्रकाशन किया। ज्योति कुंकळकार ने अमृता प्रीतम की चौदह कहानियों का कोंकणी में अनुवाद ***आंगणांतल्यों काणयो*** नामक पुस्तक में किया है। शरतचंद्र शेणै ने वर्ष 2004 में कालीकट परिषद द्वारा आयोजित नारी विषयक साहित्य चर्चा में कतिपय केरल की महिला कथाकारों को कहानियों को संकलित और संपादित कर ***साहित्यदीप्ति*** नाम से प्रकाशित किया। इनके अतिरिक्त हेमा

नायक, एन. शिबदास, भालचंद गांवकार, देवीदास कदम, जयंती नायक, प्रकाश पर्येकार आदि की कहानियाँ कोंकणी पत्र–पत्रिकाओं में बराबर छपती रहीं।

निबंध लेखन

गोवा मुक्ति के बाद कोंकणी साहित्य की विभिन्न विधाओं के लेखन में निबंध लेखन का भी उत्कृष्ट स्थान रहा है। गाँधी एवं समाजवादी वयोवृद्ध विचारक रवींद्र केळेकार ने गोवा में वैचारिक, ललित एवं दार्शनिक निबंध लिखने की एक सुदृढ़ परंपरा कायम की। वर्ष 2004 में प्रकाशित 'आमोरेर' के बाद ***तीन पावलां प्रज्ञावादाचीं*** उनका महत्वपूर्ण दार्शनिक निबंध–संग्रह है। प्रस्तुत संग्रह तीन चरणों में विभाजित है। प्रथम चरण निजी जीवन से संबंधित अवैर, शील, सत्संग, करण्यो, नीति, अनिंदा, आपणेंच आपणाक जिखचो, कूड खिणयाळी, जागरुकपण, अंतः शुद्धि, प्रज्ञा, तृष्णा, बुद्ध आदि विषयों से संबंधित छोटे–छोटे कुल 18 निबंध हैं। अन्य दो चरण भगवद्गीता, धम्मपद और विदुरनीति पर केंद्रित हैं। इन ग्रंथों का इन्होंने गहन अध्ययन, मनन, चिंतन करके अपने विचार प्रस्तुत किए हैं। भारत वर्ष की सांस्कृतिक साधना विषय पर रवींद्र केळेकार की ग्यारह निबंधों की दूसरी पुस्तक ***भारतवर्षाची संस्कृतायेची साधना*** नाम से प्रकाशित हुई। इसमें भूमिका के रूप में 'शुभास्ते पथानः संतु' एवं 'मूल स्वर' शीर्षक के अंतर्गत सुमेरियन, बाबिलोनिया, आसीरिया, पर्शिया, इजिप्त, रोम आदि की संस्कृति का उल्लेख करते हुए लेखक ने 'वसुधैव कुटुंबकम' के महत्व को रेखांकित किया है। इसके पश्चात वेद, पुराण, महाभारत, मुस्लिम युग से लेकर आज तक की सांस्कृतिक साधना का गंभीर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। कोंकणी अकादमी ने वरिष्ठ साहित्यकारों की कृति प्रकाशन योजना के तहत केळेकार जी के ***अघळ पघळ*** निबंध–संग्रह का प्रकाशन किया जिसमें देश, समाज, संत, विचारक, महापुरुषों आदि से संबंधित 35 निबंध संकलित हैं और इनकी पाँच साल पहले कुछ चिंतनपरक निबंधों की ***ओथांबे*** (सावन में बारिश जाने के बाद पेड़ के पत्तों से टपकने वाली बूंदें) नामक पुस्तक आई थी। इससे

कतिपय निबंधों को चुनकर माधवी सरदेसाई ने हिंदी में अनुवाद कर ***'पतझर में टूटी पत्तियाँ*** नामक शीर्षक पुस्तक प्रकाशित की। ये निबंध जन–जीवन के विविध पक्षों, मान्यताओं और व्यक्तिगत विचारों पर आधारित हैं जिन्हें देश और समाज के परिप्रेक्ष्य में प्रस्तुत किया गया है।

परिवेशगत जीवनानुभवों पर आधारित सुधा सुरेश आमोणकार का ***आनंदतरंग*** नाम से छोटे–छोटे पचपन निबंधों का संकलन आया। इसी प्रकार रोमिओ आल्मेदा ने बंगलौर, मुंबई, पुणे आदि विभिन्न शहरों एवं अन्य जगहों के प्रवास के दौरान वहाँ की संस्कृति, सुख–दुख, हास–परिहास, लोकगीत, मुहावरों एवं अपने जीवन के अन्य अनुभवों आदि को ***आमोरी अमुरपिकी*** के 40 छोटे–छोटे ललित लेखों के माध्यम से व्यक्त किया है। कोंकणी प्राध्यापिका प्रियदर्शिनी तडकोडकार का ***कोङ्कणी साहित्य–मञ्जिरी*** (नदर आनी नियाळ) नामक साहित्यिक निबंध–संग्रह प्रकाशित हुआ, जिसमें उन्होंने लक्ष्मणराव सरदेसाय, विष्णु पंडित, पुंडलीकनायक, वेणिमाधव बोरकार, रमेश बेलुस्कार आदि कोंकणी रचनाकारों के साहित्य एवं कोंकणी कथा और एकांकी के विविध पहलुओं का गहन विश्लेषण प्रस्तुत किया है।

गोवा के लोकजीवन की संस्कृति के अंतःसूत्रों के पारखी युवा कहानीकार एवं कोंकणी प्राध्यापक प्रकाश पर्येकार के ***दवरणें*** नामक निबंध संकलन में सतारी तालुका की जीवन–शैली एवं अन्य विषयों पर आधारित कुल 20 निबंध हैं। मुक्ति के बाद गोवा की अस्मिता को लेकर एक बड़ा प्रश्नचिह्न खड़ा हुआ। दरअसल गोवा के महाराष्ट्र में विलय और स्वतंत्र अस्तित्व को लेकर दो समूह बन गए। इस समस्या के समाधान हेतु जनमत का सहारा लिया गया जिसमें गोवा के स्वतंत्र अस्तित्व पक्ष की विजय हुई। सदानंद सीताराम काणेकार ने तत्कालीन गोवा के इस संदर्भ के विविध पहलुओं का गहन अध्ययन करके ***ओपिनीयन पोल*** नाम से 20 लेखकों की पुस्तक प्रकाशित की। इसके माध्यम से उस समय की विभिन्न परिस्थितियों का अवलोकन किया जा सकता है। कोंकणी अकादमी ने इस वर्ष शंकर भंडारी के ***पावळां–कणकणी*** निबंध–संग्रह को पुनः प्रकाशित किया।

नाट्य लेखन

भारतीय भाषाओं के साहित्य की भांति कोंकणी साहित्य की अन्य विधाओं में भी बहुत कुछ लिखा जा रहा है। कोंकणी अकादेमी ने लेखक की प्रथम कृति प्रकाशन योजना के अंतर्गत काशीनाथ नायक के ***नमन*** और मंगला नाडकर्णी के ***नाट्यचंवर*** का प्रकाशन किया। यथार्थ घटना को काल्पनिक स्वरूप प्रदान करते हुए महेश चंद्रकांत–नाईक का ***आय ॲम सॉरी*** नाम से दो अंकों का नाटक प्रकाशित हुआ। उल्हास यशवंत नायक ने राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक, शैक्षंणिक, मनोविश्लेषणात्मक आदि विषयों पर केंद्रित नाटकों और एकांकियों का सर्जन किया है। इन्हीं विषयों पर आधारित ***चतुर्विध*** पुस्तक में इनके *हें अशेंच चलपाचें', अशांत उजो, एक चित्र अर्दकुटें* और *असत्यमेव जयते* नामक चार एकांकी संकलित हैं। यहाँ तियात्र और नाटक की प्राचीन परंपरा विद्यमान है। प्रत्येक वर्ष विशेष धार्मिक अवसरों पर आयोजित बड़ी–बड़ी जात्राओं में यहाँ की अनूठी लोकसंस्कृति को देखा जा सकता है। इसी प्रकार अखिल गोवा स्तर पर हर साल कोंकणी नाट्य स्पर्धाओं का आयोजन एवं मौलिक नाट्य लेखन के साथ–साथ अन्य भाषाओं के नाटकों का अनुवाद कोंकणी में किया जाता है।

अन्य लेखन

कोंकणी सहित्य समीक्षा की दृष्टि से किरण बुडकुळे का नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है जिनकी समीक्षाएँ यहाँ की प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहती हैं। इनके अतिरिक्त शीला कोळंबकार, अना म्हांबरो, सुशांत, जयमाला, दत्ताराम, राजय पवार, मुकेश थळी, सुधा, हर्षा आदि के वैचारिक और ललित निबंध मासिक पत्रिका 'जाग' के दिवाली अंक 05 में प्रकाशित हुए हैं।

कोंकणी के जनक एवं भक्त शणै गोंयबाब ने कोंकणी भाषा और साहित्य रूपी घड़े को कुम्हार की भांति गढ–गढ कर बड़ी मरम्मत से तैयार किया जिनका नाम कोंकणी भाषा एवं साहित्य में सदैव अमर रहेगा। उन्हीं के जीवन के विविध पहलुओं, प्रसंगों, यादों को शांताराम आमोणकार ने अपनी पुस्तक ***'उगडासांचे कोठ्ये–कुडींत*** में सजाया है। शणै गोंयबाब की 128

वीं वर्षगांठ पर उनके जीवन और साहित्य पर एक परिचर्चा का आयोजन किया गया, जिसमें गोवा के विभिन्न विद्वानों ने भाग लिया। भिकू बोमी नायक ने उनके विचारों को संकलित कर ***युगपुरुष शणै गोंयबाबः एक परिचर्चा*** नाम से एक पुस्तक का संपादन और प्रकाशन किया।

प्रकाश थळी ने स्वर्गीय साहित्यकार लक्ष्मणराव् सरदेसाय के बहुआयामी व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर पुस्तक का सर्जन किया, जिसका विमोचन 20 अगस्त 05 को प्रमुख अतिथि किरण वुडकुळे के द्वारा किया गया। पत्रकार दिलीप बोरकार ने यहाँ के प्रसिद्ध एवं वयोवृद्ध रचनाकार रवींद्र केळेकार के जीवन एवं व्यक्तित्व के विविध पहलुओं और प्रसंगों पर विशद एवं गहन विवेचन प्रस्तुत करते हुए ***श्रेयार्थी*** नामक पुस्तक का प्रकाशन स्वयं किया है। गोवा के फलों, फूलों और वनस्पतियों की विशेषताओं का परिचयात्मक अध्ययन प्रस्तुत करते हुए भूषण भावे के संपादकत्व में ***मोटोळी*** नाम से पर्यावरण पर केंद्रित पुस्तक प्रकाशित हुई जोकि अपने–आप में विशिष्ट है। ***जिवीत शिल्प*** राम कामत की आत्मचरित्र नामक पुस्तक प्रकाशित हुई जिसमें उन्होंने अपने जीवनानुभवों को वाणी दी है। राजश्री बांदोडकार कारापुरकार की पर्यावरण से संबंधित ***सैमाकडेन संवाद*** पुस्तक प्रकाशित हुई जोकि अपने ढंग की अनूठी पुस्तक है इसमें प्रकृति के फूलों, पत्तों, चिड़ियों आदि से संवाद स्थापित किया गया है।

पत्र-पत्रिकाएँ

गोवा से एकमात्र दैनिक ***सूनापरांत*** पणजी से संदेश प्रभुदेसाय के संपादकत्व में निकलता है। इसे हम गोवा प्रदेश का परिवेशगत दर्पण कह सकते हैं। ***जाग, बिंब, गुलाब, कुळागर, ऋतु, कोंकण टायम्स, शोध–पत्रिका,*** आदि मासिक एवं त्रैमासिक पत्रिकाएँ कोंकणी साहित्य एवं यहां के राजनैतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक आदि जीवन को केंद्र में रखकर क्रमशः माधवी सरदेसाय, दिलीप बोरकार, फ्रेडी डिकोस्टा, हेमा नायक, गोकुलदास प्रभु, तुकाराम शेट, ओर प्रताप नायक आदि के संपादकत्व में निकलती हैं। कहानी, निबंध, समीक्षा आदि की दृष्टि से ***जाग*** का दिवाळी अंक पठनीय है। कोंकणी भाषा मंडल, मडगांव से ***कोंकणी*** नामक

पत्रिका संप्रति अध्यक्ष के संपादन में से निकलती है। अभी हाल ही में युवा कोंकणी रचनाकार पूर्णानंद चारी ने अध्यक्ष पद स्वीकार किया है। मंगलूर से कन्नड लिपि में ***अमर कोंकणी*** नाम से एक पत्रिका का प्रकाशन होता है। यहाँ अंग्रेजी भाषा का वर्चस्व होने के कारण बहुत–सी अंग्रेजी पत्र–पत्रिकाएँ निकलती हैं जिनमें गोवा की जीवंत तस्वीर को देखा जा सकता है।

पुरस्कार

साहित्य अकादमी, नई दिल्ली ने कोंकणी को 1975 में स्वतंत्र भाषा के रूप में मान्यता प्रदान की। उस समय से 2004 तक 28 विभिन्न विधाओं के कोंकणी रचनाकारों को साहित्य अकादमी के पुरकार से नवाजा जा चुका है। वर्ष 2005 का यह पुरस्कार कोंकणी कथाकार एन. शिवदास को उनके कहानी–संग्रह ***मांगरसाळ*** के लिए और रमेश लाड को अनुवाद का पुरस्कार ***मोटल्यो कथा*** के लिए दिया गया। यह रचना मूलतः कन्नड से अनूदित की गई है। साहित्य, कला, संगीत, नाटक आदि के संवर्धन हेतु स्थापित कला अकादेमी ने जाने–माने कथाशिल्पी, पत्रकार चंद्रकांत केणी को उनकी साहित्यिक उपलब्धियों के लिए मार्च को ***गोमंत शारदा*** पुरस्कार से सम्मानित किया।

विविध

कोंकणी भाषा, साहित्य और संस्कृति के विकास हेतु यहाँ की संस्थाओं द्वारा वर्षभर विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन किया जाता है। गोवा कोंकणी अकादेमी ने 7, 8 और 9 जनवरी 05 को प्रारंभ, प्रवेश, परिचय और प्रवीण स्तर के लिए कोंकणी प्रमाणपत्र परीक्षा का आयोजन किया। 17 से 22 जनवरी 05 के बीच अकादेमी ने अखिल गोवा स्तर पर ***नाटक–तियात्र महोत्सव*** का आयोजन किया, जिसमें ***परतीचे वाटेर, पांखां, पप्पा सांगात कोणाचे, आमचो हात जगन्नाथ, धांव धां धांवळो*** नाटकों की प्रस्तुति की गई। 05 फरवरी 2005 को 'कोंकणी राज्यभाषा दिवस' के शुभ अवसर पर ***संघर्ष और साहित्य*** विषय पर एक वार्ता का आयोजन सांखळी में किया गया। इसमें भूषण भावे, दिलीप बोरकार, धर्मानंद वेर्णेकार, हेमा नायक एवं झाबिना मार्टीस ने भाग लिया। 3/7–8 एवं 20 अक्टूबर 2005 को क्रमशः

अकादमी ने ***बाल शिक्षणः स्वरूप और पद्धति*** विषय पर साहित्य अकादमी, नई दिल्ली के सहयोग से 'बालसाहित्य' विषय पर तथा अकादमी ने स्वयं राजीव कला मंदिर फोंडा में प्रमुख अतिथि भीमराव पांचाळ की उपस्थिति में ***कोंकणी गझळे*** विषय पर एक दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया। अकादेमी ने नेशनल बुक ट्रस्ट, नई दिल्ली के सहयोग से 21.9.05 से 4.10.05 तक 'पुस्तक प्रकाशन प्रशिक्षण अभ्यासक्रम' का आयोजन किया।

कोंकणी भाषामंडल, मडगाव ने अपनी 43वीं वर्षगांठ पर 30 सितंबर को पी. वी. वजरीकार को ***आनी एक बूतो फुल्लो*** (नाटक), परेश कामत को ***गारबाखोळ*** (काव्य), ***फुट्ट*** के लिए बी. डी. कोस्टा को, कोंकणी पत्रकारिता के लिए चंद्रकांत केणी एवं कोंकणी भाषा और साहित्य की समृद्धि के लिए सुहास दलाल को विभिन्न साहित्यिक एवं अन्य पुरस्कारों से सम्मानित किया। 17 अक्टूबर 05 को तृतीय राज्य स्तरीय फिल्मोत्सव का उद्घाटन राज्यपाल एस. सी. जमीर के कर कमलों से हुआ। इस अवसर पर मुख्यमंत्री ने कहा कि गोवा में कोंकणी और मराठी में फिल्म बनाने वालों को सरकारी वित्तीय सहायता प्रदान की जाएगी। 24 अक्टूबर 2005 को मुख्यमंत्री ने राजेंद्र तलक के निर्देशन में बनी राष्ट्रीय रीजनल पुरस्कार से पुरस्कृत कोंकणी फिल्म ***अलीशा*** की बी. सी. डी. का लोकार्पण किया।

22–23 दिसंबर को साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, प्रतिबिंब द्वारा ***काव्य और फिल्म उत्सव*** का आयोजन किया गया। इसमें गुलजार, गोपीचंद नारंग, कन्हैया लाल नंदन, अनामिका, सुनील गंगोपाध्याय आदि देश के विभिन्न भाषा–भाषी एवं स्थानीय कवियों और साहित्यकारों ने भाग लिया। कार्यक्रम का संयोजन यहाँ के स्थानीय श्रेष्ठ कोंकणी कथाकार दामोदर मावजो ने किया।

जैसा कि मैंने पहले ही संकेत किया था कि कोंकणी भाषा और साहित्य का वास्तविक विकास गोवा मुक्ति के बाद हुआ। आज कोंकणी प्रगति के पथ पर निरंतर अग्रसर है फिर भी उसे अपनी गहनता और व्यापकता के लिए अन्य भारतीय भाषाओं को साथ लेकर चलने की आवश्यकता है।

❋❋❋